प्रकाशन तिथि : 01 फरवरी, 2025
प्रेषण तिथि : 04 फरवरी, 2025

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2024-2026
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 28 | अंक 22 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रति: रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

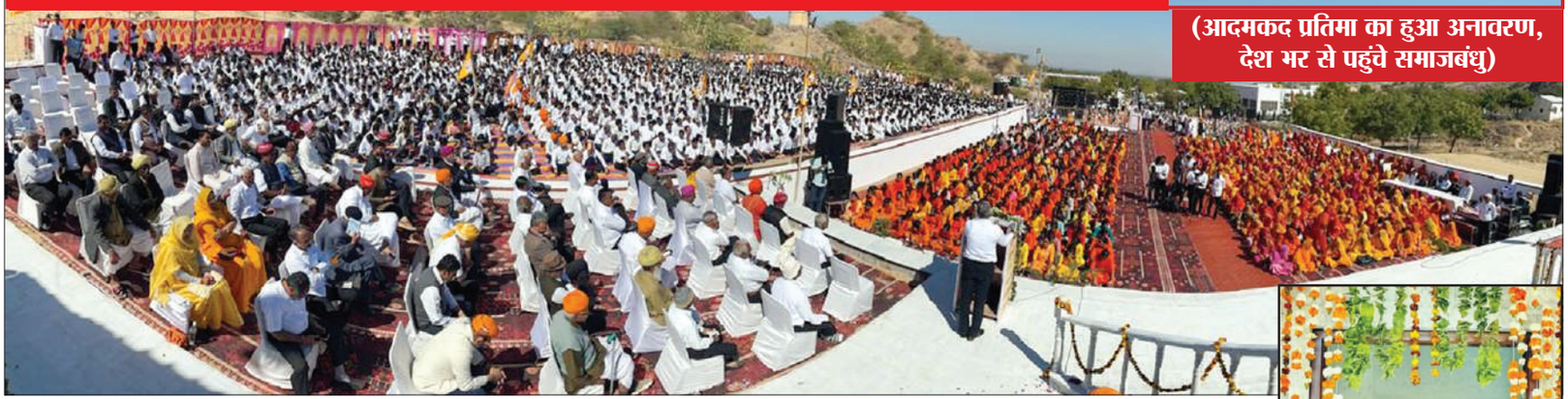

(आदमकद प्रतिमा का हुआ अनावरण, देश भर से पहुंचे समाजबंधु)

पूज्य तनसिंह जी की 101वीं जयंती पर स्मारक का लोकार्पण

25 जनवरी को श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक पूज्य श्री तनसिंह जी की 101वीं जयंती के अवसर पर बाड़मेर में गेहूं रोड स्थित आलोक आश्रम में पूज्य श्री तनसिंह जी के नवनिर्मित स्मारक का लोकार्पण एवं प्रतिमा का अनावरण समारोह पूर्वक किया गया। माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह जी रोलसाहबसर की इच्छा थी कि संघ के आदर्श शिविर स्थल के रूप में विकसित हो रहे आलोक आश्रम में पूज्य तनसिंह जी का स्मारक भी होना चाहिए जिससे यहां आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को प्रेरणा प्राप्त हो। उनके इच्छा को आज्ञा समझ कर स्वयंसेवकों द्वारा कार्य प्रारंभ किया गया एवं पूज्य श्री की 101वीं जयंती पर स्मारक के अनावरण का निश्चय किया गया। स्मारक निर्माण में कुछ कठिनाइयों के चलते विलंब की संभावना होने पर संरक्षक श्री स्वयं बाड़मेर पहुंचे एवं अपनी देखरेख में समय पर कार्य संपन्न करवाया। भारतीय ग्राम्य आलोकायन ट्रस्ट के तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम में देश भर से हजारों समाजबंधु मातृशक्ति सहित शामिल हुए और पूज्य तनसिंह जी के प्रति अपनी श्रद्धा व कृतज्ञता प्रकट की। यज्ञ के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ जिसके बाद माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर ने पूज्य तनसिंह जी की आदमकद प्रतिमा का अनावरण किया।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

'हमारे हृदय में बैठकर तनसिंह जी कर रहे हैं मार्गदर्शन'

(माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी के उद्बोधन का संपादित अंश)

तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ प्रारंभ क्यों किया, हमें यह सोचना चाहिए। पिलानी में पढ़ते समय सन् 1944 में दीपावली की रात्रि को जब चारों तरफ खुशियां मन रही थी, पटाखे छूट रहे थे और रोशनी हो रही थी उसको देख करके हॉस्टल के अपने कमरे में बैठे-बैठे उन्होंने चिंतन किया कि सब लोग इतनी खुशियां मना रहे हैं पर मेरे समाज के लिए खुशी मनाने जैसी कोई चीज नहीं दिखती है। (शेष पृष्ठ 2 पर)

'पूज्य तनसिंह जी की दिव्यता का साक्षात स्वरूप है श्री क्षत्रिय युवक संघ'

(माननीय संघप्रमुख श्री द्वारा प्रदत्त उद्बोधन का संपादित अंश)

आज के इस कार्यक्रम में पूज्य तनसिंह जी की दिव्य उपस्थिति उनकी इस प्रतिमा में साकार रूप में दिखाई दे रही है क्योंकि हम सब की श्रद्धा और विश्वास इस प्रतिमा में आरोपित हो गया है। पूज्य तनसिंह जी की महिमा के बारे में बताना सूरज को दीपक दिखाने के समान है। (शेष पृष्ठ 2 पर)

स्मारक केवल प्रतीक है, अंत:प्रेरणा को जगायें: संरक्षक श्री

(स्मारक लोकार्पण समारोह में माननीय संरक्षक श्री द्वारा प्रदत्त उद्बोधन का संपादित अंश)

पूज्य तनसिंह जी का यह स्मारक, जिसका लोकार्पण आज हुआ है, इसके निर्माण कार्य में बड़ी कठिनाइयां भी आई। लेकिन पूज्य तनसिंह जी की प्रेरणा से सब कार्य समय पर संपन्न हो गया और आज मूर्ति का अनावरण भी हो गया है। यहां के स्थानीय सहयोगियों के साथ उदयपुर और जयपुर से भी स्वयंसेवकों ने यहां पहुंचकर कार्य में सहयोग किया। जिनके साथ भगवान की कृपा होती है उनका काम होकर ही रहता है। मुझे ऐसा अनुभव हुआ कि यह निवास भगवान का निवास है और इसीलिए उस विश्वास के आधार पर ही यह कार्य पूर्ण हुआ।

पूज्य तनसिंह जी साधारण व्यक्ति नहीं थे, वे अवतरित महापुरुष थे। विभिन्न युगों में विभिन्न रूप से सज्जन पुरुषों की रक्षा करने के लिए, दुष्ट लोगों का विनाश करने के लिए और धर्म की भली-भांति स्थापना करने के लिए भगवान का अवतार होता रहा है। धर्म की व्याख्या को हम ऐसे समझें कि क्षत्रियों ने बहुत लंबे समय तक राज किया। उनके पास जो शक्ति थी वह धीरे-धीरे क्षय होने लगी। परिणाम स्वरूप सब ओर अराजकता फैल रही है, कोई किसी से प्रसन्न नहीं है। (शेष पृष्ठ 6 पर)

पूज्य तनसिंह जी की 101वीं जयंती पर स्मारक का लोकार्पण

(पेज एक से लगातार)

इस अवसर पर माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास, वरिष्ठ स्वयंसेवक महावीर सिंह जी सरवड़ी, पूज्य तनसिंह जी के पुत्र पृथ्वी सिंह रामदेरिया व पुत्रियां बालू कंवर जी व जागृति कंवर जी उपस्थित रहे। कार्यक्रम को माननीय संरक्षक श्री, माननीय संघप्रमुख श्री, माननीय महावीर सिंह सरवड़ी, पूज्य तनसिंह जी की पुत्री जागृति कंवर हरदासकाबास एवं पोकरण विधायक महंत प्रताप पुरी ने संबोधित किया। कार्यक्रम में बाड़मेर विधायक डॉ प्रियंका चौधरी, शिव विधायक रविंद्र सिंह भाटी, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के धर्म जागरण प्रमुख सत्यम जी, भाजपा नेता स्वरूप सिंह खारा, कांग्रेस नेता आजाद सिंह शिवकर, राजेंद्र सिंह भिंयाड, खुमाण सिंह सोढ़ा, जैसलमेर कांग्रेस अध्यक्ष जसवंत सिंह भाटी, रिडमल सिंह दांता, रतन सिंह बाखासर, कैप्टन हीर सिंह भाटी, स्वरूप सिंह चाडी, कमल सिंह चूली सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। कार्यक्रम में शामिल होने के लिए बाड़मेर जैसलमेर के अनेकों गांवों के साथ ही राजस्थान के जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, चित्तौड़गढ़, बीकानेर, जालौर, पाली, सिरोही, नागौर, सीकर आदि जिलों से बस एवं अन्य वाहनों द्वारा स्वयंसेवक व समाजबंधु सपरिवार पहुंचे। गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, दिल्ली आदि राज्यों से भी समाजबंधु कार्यक्रम में शामिल हुए। राजपूत समाज के साथ ही अन्य सहयोगी समाजों के अनेक व्यक्ति भी कार्यक्रम में शामिल हुए एवं पूज्य श्री तनसिंह जी को

श्रद्धांजलि दी। समारोह के अंत में शक्ति पूजा का कार्यक्रम भी रखा गया जिसमें सभी उपस्थित जनों ने पूज्य तनसिंह जी की प्रतिमा को नमन करने के पश्चात केसरिया ध्वज के सामने पुष्पांजलि अर्पित करते हुए अपनी ओर से श्रद्धानुसार भेंट प्रस्तुत की। बाड़मेर विधायक प्रियंका चौधरी ने आश्रम में विभिन्न विकास कार्यों के लिए विधायक कोष से 20 लाख रुपए देने की घोषणा भी की।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

समाज की नींव है बालिकाएं, उन्हें संस्कारित बनाएं

(वरिष्ठ स्वयंसेविका जागृति बा हरदासकाबास के उद्बोधन का संपादित अंश)

मैं मारवाड़ की इस धरा को प्रणाम करती हूं जिसने ऐसे युगपुरुष तनसिंह जी को जन्म दिया जिन्होंने वह राह दिखाई जिस पर चलकर हम सभी अपने जीवन को आगे बढ़ा रहे हैं। 1946 में पूज्य श्री तनसिंह जी के हृदय की पीड़ा श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में प्रकट हुई। उनके हृदय में उस समय यह पीड़ा भी रही होगी कि मेरे समाज की बालिकाओं के लिए भी ऐसा कार्य होना चाहिए लेकिन वह समय ऐसा था कि यह कार्य मन में होने के बाद भी उन परिस्थितियों में प्रारंभ नहीं हो पाया। बाद में गुजरात के वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीत सिंह जी धोलेरा और माननीय भगवान सिंह जी साहब इस विषय पर चर्चा की और 1995 में संघ के प्रथम बालिका शिविर का आयोजन गुजरात के धंधुका में हुआ और दूसरा शिविर जयपुर में संघशक्ति में हुआ।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

कर्तव्य बोध से ही हल होंगी समस्याएं

(तारातरा महंत प्रताप पुरी जी के उद्बोधन का संपादित अंश)

राष्ट्रभक्तों की यह तपोभूमि, मरूभूमि जहां जन्मे पूज्य श्री तनसिंह जी, उन्होंने संगठन का साकार स्वरूप अपने दर्शन में दिया है। हम सब एक साथ मिल कर रहें यही उनका दर्शन है। साथ ही साथ मैं कौन हूं, यह प्रश्न भी अपने से पूछना आवश्यक है। जिस प्रकार अर्जुन के हताश होने पर श्री कृष्ण ने उन्हें अपने वास्तविक स्वरूप का भान कराया, उसी प्रकार हमें भी अपने कर्तव्य का बोध हो जाएगा यदि हम यह पहचान गए कि हम कौन हैं? जितनी समस्याएं हमारे सामने खड़ी हैं, चाहे वे परिवार की हों, समाज की हों या क्षेत्र की हों, उनका समाधान इसी प्रश्न के उत्तर में है। पूज्य तनसिंह जी ने अपने कर्तव्य का बोध किया, उस कर्तव्य का पालन किया और वे इतिहास में अमर हो गए। उन्हीं की प्रेरणा से अब हमें भी अपने कर्तव्य का बोध करके उसका पालन करना है। हम वर्तमान में जो भी हैं, उस रूप में हमारा जो कर्तव्य है, वही हमारा धर्म भी है। अपने धर्म को जानकर भी जो उसका पालन नहीं करता है वह महापापी होता है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

'पूज्य तनसिंह जी की दिव्यता का साक्षात स्वरूप है श्री क्षत्रिय युवक संघ'

(पेज एक से लगातार)

लेकिन तनसिंह जी की महिमा और दिव्यता को यदि हमें देखना है तो श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में

हम साक्षात देख सकते हैं। आप में से अधिकांश लोगों ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविरों में, शाखाओं में, कार्यक्रमों में भाग लिया है और जो दिव्यता संघ में आपने देखी है वह पूज्य तनसिंह जी की ही प्रेरणा है। वह प्रेरणा आज भी हमें प्राप्त हो रही है और आने वाले हजारों साल तक प्राप्त होती रहेगी। महापुरुष संसार में तब आते हैं जब संसार में विघटन फैला हो, संसार अनाचार की ओर जा रहा हो, पतन के मार्ग पर जा रहा हो। तब ऐसे दिव्य पुरुष अवतरित होकर उस अनाचार और पापाचार को रोकने का कार्य करते हैं। अनेकों महापुरुष अपने जीवन काल में इस प्रकार के कार्य करते हैं लेकिन उनमें भी बहुत कम महापुरुष ऐसे होते हैं जो समाज में फैली हुई अव्यवस्था, अनाचार और पापाचार को रोकने के साथ ही आने वाले हजारों वर्षों के लिए एक मार्ग भी बना जाते हैं जिस पर चलकर सभी अनाचार और पापाचार से बच सकते हैं। तनसिंह जी ऐसे ही युगपुरुष थे। अपने छोटे से जीवन काल में उन्होंने अनेक पुस्तकें लिखकर समाज के लिए प्रेरणा का स्थायी स्रोत दिया, आदर्श राजनीति किस प्रकार से की जाती है यह करके दिखाया, उन्होंने व्यापार भी किया, कृषि भी की, अपने परिवार का पालन भी किया। लेकिन तनसिंह जी को हमें क्यों याद करना चाहिए? क्या वह लेखक थे या राजनीतिज्ञ थे, या व्यापारी और वकील थे इसलिए, लेकिन ऐसे काम तो बहुत लोग करते हैं। यह सभी संभावनाएं तो सामान्य व्यक्तियों में भी होती हैं। लेकिन पूज्य तनसिंह जी को याद किया जा रहा है उनकी उस दिव्य प्रेरणा के लिए जिससे उन्होंने श्री क्षत्रिय युवक संघ रूपी मार्ग बनाया। दुगार्दास, महाराणा प्रताप आदि को हम स्मरण करते हैं लेकिन दुगार्दास और महाराणा प्रताप बनाने का मार्ग कौन सा हो सकता है, हाड़ी रानी और मीराबाई बनाने का मार्ग कौन सा हो सकता है? वह मार्ग पूज्य तनसिंह जी ने बताया है और इसीलिए आज हम उनको 100 साल बाद भी याद कर रहे हैं। एक सदी पूर्व पूज्य तनसिंह जी का जन्म हुआ और आज हजारों लोग दूर-दूर से आकर उनसे प्रेरणा प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं। हमारी श्रद्धा ही किसी भी स्मारक को जीवंत बनाते है। यदि हम अपना विश्वास और श्रद्धा इस मूर्ति में आरोपित कर देंगे तो यह हमारे लिए साक्षात तनसिंह जी बन प्रेरणा प्रदान करेगी।

'हमारे हृदय में बैठकर तनसिंह जी कर रहे हैं मार्गदर्शन'

(पेज एक से लगातार)

जैसी आज समाज की स्थिति है, जितनी उसकी उपेक्षा हो रही है, जितनी हमारे अंदर गलत धारणाएं पनप

गई हैं, उन सब के रहते हम कैसे खुशी मना सकते हैं? इस चिंतन से ही संघ का बीज पड़ा और उसका परिणाम हुआ 1944 में श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना के रूप में। प्रारंभ में इस संस्था में अधिवेशन होते थे, कार्यकारिणी बनती थी, प्रस्ताव पास होते थे लेकिन इससे तनसिंह जी संतुष्ट नहीं थे। फिर उन्होंने नागपुर में वकालत करते समय अपने अनुभवों से दैनिक शिक्षण देने का एक कार्यक्रम तैयार किया और इस संबंध में तत्कालीन कार्यकारिणी के सदस्यों को पत्र लिखा। सभी साथियों ने तनसिंह जी से सहमति जताई और 22 दिसंबर 1946 को जयपुर में वर्तमान रूप में श्री क्षत्रिय युवक संघ प्रारंभ हुआ और तीन दिन बाद ही 25 दिसंबर से वहां एक शिविर भी लगा। शिविर के अनुभव से यह विश्वास गहरा हुआ कि श्री क्षत्रिय युवक संघ को यदि समाज में परिवर्तन लाना है तो यही कार्यप्रणाली प्रभावी हो सकती है और तब से यह संस्कार निर्माण का कार्य बराबर चल रहा है। ऐसा नहीं है कि सभी ने समर्थन ही किया हो, तनसिंह जी का विरोध भी खूब हुआ लेकिन यह प्रणाली तनसिंह जी की प्रेरणा से निरंतर चलती रही। लगातार कार्य करते रहने से अनेक विरोधियों के भाव भी बदल गए। यद्यपि विरोध कभी भी पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ लेकिन तनसिंह जी ने सभी विरोधों को सहन किया। अपने साथियों को भी तनसिंह जी ने यही कहा कि निर्लिप्त होकर अपना काम करते रहो। उसी का परिणाम है कि धीरे-धीरे श्री क्षत्रिय युवक संघ विशाल रूप लेता जा रहा है। विरोध करने वाले आज भी हैं लेकिन अब हम यह मान कर चलते हैं कि विरोध करने वाले भी हमारा सहयोग कर रहे हैं क्योंकि जब वे विरोध करेंगे तब हम अधिक सतर्क होकर कार्य करेंगे। पूज्य श्री तनसिंह जी की प्रेरणा से ही संघ आज भी चल रहा है, वही हमें गाइड कर रहे हैं। यह हमारे विश्वास पर निर्भर करता है कि हम तनसिंह जी के निर्देशन को कितना समझ पाते हैं। कार्य करते हुए अनेक प्रकार की समस्याएं भी आती हैं लेकिन सभी समस्याओं का एक ही उत्तर है - जो संघ कहे, वह करते जाओ। अपने आप रास्ता आगे खुलेगा। समाज की आवश्यकता की पूर्ति करने के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ बना और आज हमारा यह दायित्व है कि इस संघ को और अधिक बलवान बनाएं। इसके लिए हम स्वयं का निर्माण करने में लग जाएं और उसके माध्यम से समाज का निर्माण भी स्वतः ही हो जाएगा।

लेफ्टिनेंट जनरल पदम सिंह शेखावत को पीवीएसम, अन्य वीरों को भी मिला सम्मान

लेफ्टिनेंट जनरल पदम सिंह शेखावत पुत्र करणी सिंह शेखावत को राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू द्वारा 76वें गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर सैन्य पुरस्कार परम विशिष्ट सेवा मेडल से सम्मानित किया गया। झुंझुनू जिले के निराधनु गांव के मूल निवासी पदम सिंह 19 दिसंबर 1987 को 16 मैकेनाइज्ड इन्फैंट्री में नियुक्त हुए। उनके पास विभिन्न हाई प्रोफाइल कमांड स्टॉफ और अनुदेशात्मक नियुक्तियों का व्यापक अनुभव है। गलवान घाटी में भारत और चीन के

बीच टकराव के दौरान उन्होंने पूर्वी लद्दाख में एक माउंटेन डिवीजन की कमान भी संभाली। वे राष्ट्रीय रक्षा अकादमी, खडकवासला में प्रशिक्षक के पद पर अपनी सेवाएं दे चुके हैं। उन्होंने UNIFIL लेबनान में संपर्क अधिकारी, सेना मुख्यालय की सैन्य सचिव शाखा में सहायक सैन्य सचिव, इन्फैंट्री डिवीजन में कर्नल जनरल स्टाफ, मैकेनाइज्ड फोर्स के महानिदेशक, कर्नल जनरल स्टाफ (प्रशिक्षण) के रूप में भी कार्य किया है। दक्षिण पश्चिमी कमान में ब्रिगेडियर जनरल स्टॉफ (ऑपरेशंस), मेजर जनरल प्रशासन दक्षिणी कमान एवं सेना मुख्यालय में महानिदेशक (अनुशासन, समारोह और कल्याण) के प्रतिष्ठित पदों पर रह भी रह चुके हैं। वे मैकेनाइज्ड इन्फैंट्री रेजिमेंट के कर्नल ऑफ दी रेजिमेंट हैं। इसके अतिरिक्त कैप्टन दीपक सिंह (48 आरआर) एवं हवलदार रोहित कुमार, डोगरा को मरणोपरांत शौर्य चक्र से सम्मानित किया गया। लेफ्टिनेंट कर्नल विजय गुलेरिया, मेजर राजेंद्र सिंह (3 कोर इंट बीएन), मेजर अरमान सिंह शेखावत (पंजाब, 22 आरआर, सेना), हवलदार ठाकुर बहादुर आले, नायक अनिल राणा (कुमाऊं, 50 आरआर, सेना) नायक राहुल सिंह नागी (पैरा) को सेना पदक (वीरता) से सम्मानित किया गया। लेफ्टिनेंट कमांडर सत्यम सिंह को नौसेना पदक (वीरता) एवं ग्रुप कैप्टन अंकित राज सिंह, विंग कमांडर दुष्यंत सिंह राठौड़ को वायु सेना पदक (वीरता) से सम्मानित किया गया।

विवाह के अवसर पर शिक्षा नेग की पहल

शेरगढ़ विधायक बाबू सिंह राठौड़ ने अपने पुत्र भानु प्रताप सिंह के विवाह के अवसर पर अनुकरणीय पहल करते हुए विवाह को न केवल नशा, टीका आदि से मुक्त रखा बल्कि राजपूत समाज के आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों की शिक्षा में सहयोग हेतु 11 लाख रुपए समाज के विकास कोष को दान भी किए। विधायक ने कहा कि समाज में फैल रही नशे आदि की कुरीतियों को रोकने के लिए हम सभी को अपने घर से शुरूआत करनी होगी। इसी सोच के साथ इस विवाह को नशा दहेज आदि से मुक्त रखा गया। इस अवसर पर पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे, केन्द्रीय संस्कृति मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत सहित अनेकों जनप्रतिनिधि एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे एवं सभी ने राठौड़ की इस पहल की सराहना की। हरियाणा के सतनाली में 22 जनवरी को राजपूत सभा महेंद्रगढ़ के पूर्व प्रधान सवाई सिंह राठौड़ ने अपने पुत्र अंकित राठौड़ के विवाह में किसी प्रकार का दहेज व टीका ना लेकर केवल शगुन लेकर विवाह संपन्न किया एवं समाज के सामने अनुकरणीय

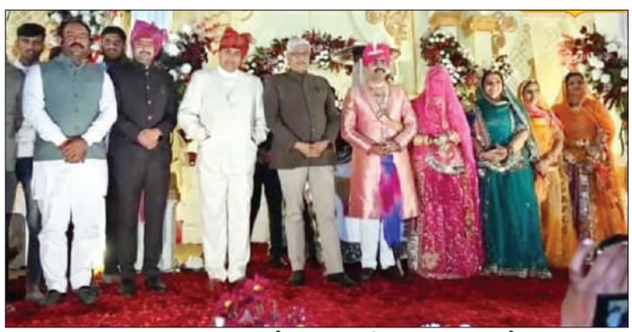

उदाहरण प्रस्तुत किया। जालोर जिले की आहोर तहसील के मंडला गांव निवासी पाबूसिंह पुत्र स्व. भीम सिंह बालोत ने भी अपनी पुत्री वंशिकाराज (भावना बालोत) के 21 जनवरी को संपन्न हुए विवाह में शराब व अन्य दुर्व्यसन का उपयोग नहीं करके एक अच्छी पहल की। वर के पिता सांगवाडा (सिरोही) निवासी हरिसिंह ने भी टीके की 5 लाख राशि वापिस लौटा दी। पाबूसिंह मंडला वर्तमान में खंड विकास अधिकारी कार्यालय आहोर में कार्यरत है।

लाडपुरा (पाली) में 21 जनवरी को पीर सिंह जेतावत ने अपनी पौत्री मरूधर कंवर के विवाह के अवसर पर ग्यारह हजार रुपए शिक्षा नेग के रूप में राजपूत शिक्षा कोष को भेंट किए। इससे प्रभावित हो दूल्हे महावीर सिंह झाला के पिता उदय सिंह झाला मांडक का गुड़ा (मेवाड) ने भी इक्कीस हजार रुपए का शिक्षा नेग भेंट किया। उल्लेखनीय है कि राजपूत शिक्षा कोष समाज के आर्थिक रूप से कमजोर प्रतिभावान बालक-बालिकाओं की शिक्षा हेतु छात्रवृतियां प्रदान करता है एवं इस हेतु समाजबंधुओं को विवाह आदि के अवसर पर शिक्षा नेग के माध्यम से सहयोग के लिए प्रेरित करता है। इसी प्रकार पाटोदी क्षेत्र के केलनकोट गांव के निवासी पप्पू सिंह ने 23 जनवरी को अपने पुत्र के विवाह के अवसर पर जवाहर राजपूत छात्रावास पाटोदी में एक कमरे के निर्माण हेतु तीन लाख ग्यारह हजार रुपए भेंट करने की घोषणा की गई। उक्त विवाह पूर्ण रूप से नशामुक्त भी रखा गया।

कोटा में राजपूत कर्मचारी स्नेह मिलन एवं संवाद कार्यक्रम

श्री राजपूत कर्मचारी संघ राजस्थान के तत्वावधान में वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की पुण्यतिथि पर राजपूत कर्मचारी स्नेह मिलन एवं संवाद कार्यक्रम का आयोजन 19 जनवरी को कोटा के शगुन मैरिज गार्डन में किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि गजेंद्र सिंह (उपखंड अधिकारी कोटा) ने समाज के युवाओं को शिक्षा से जोड़ने की बात कही और समाज की प्रगति में शिक्षा के महत्व के बारे में समझाया। भानु प्रताप सिंह ने उपयोगी सरकारी योजनाओं के सम्बन्ध में जानकारी दी। पूनम कंवर ने समाज में व्याप्त कुप्रथाओं के दुष्प्रभाव को लेकर चेताया। उमा हाड़ा ने समाज में बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने और समाज के विकास में मातृशक्ति की भूमिका पर विचार रखे। देवेन्द्र सिंह शेखावत ने महाराणा प्रताप के जीवन और चरित्र पर प्रकाश डाला। सुरेन्द्र सिंह सांदरसर ने श्री क्षत्रिय युवक संघ का परिचय देते हुए पूज्य तनसिंह जी के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला। श्री राजपूत कर्मचारी संघ राजस्थान के दशरथ सिंह ने संस्था के उद्देश्य को विस्तार से उपस्थित कर्मचारियों के सामने रखा। भंवर सिंह भाटी (अध्यक्ष हाड़ौती क्षत्रिय शिक्षा प्रचारिणी समिति कोटा), गुलाब कंवर (पूर्व प्रिंसीपल मेडिकल कॉलेज बूंदी), कविता शेखावत, विक्रांत सिंह हाडा, कृष्ण कुमार राघव, हनुमान सिंह शक्तावत, डी के सिंह आदि ने भी अपने विचार रखे एवं समाज के लिए एकजुट होकर कार्य करने की बात कही। कार्यक्रम का संचालन नन्दराज सिंह सिसोदिया ने किया। कार्यक्रम के संयोजक दिग्विजय सिंह राजावत ने सभी का स्वागत किया व निरंजन सिंह ने सभी का आभार ज्ञापित किया। सभी अतिथियों को महाराणा प्रताप की तस्वीर स्मृति चिह्न के रूप में भेंट की गई।

जोधपुर विश्वविद्यालय में लगेगी महाराजा जसवंत सिंह द्वितीय की प्रतिमा

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय परिसर में स्थित ओल्ड कैंपस में महाराजा जसवंत सिंह द्वितीय की प्रतिमा स्थापित की जाएगी जिसका भूमि पूजन कार्यक्रम 25 जनवरी को आयोजित किया गया। पूर्व सांसद व जोधपुर के पूर्व महाराजा गज सिंह की उपस्थिति में संपन्न इस कार्यक्रम में छात्र संघ अध्यक्ष अरविंद सिंह भाटी ने कहा कि महाराजा जसवंत सिंह द्वितीय आधुनिक जोधपुर के निर्माता थे। उन्होंने जोधपुर की प्रजा के हित में अनेकों कार्य किए। सन् 1893 में एसएमके जसवंत कॉलेज की स्थापना भी उन्होंने की। ऐसे महान व्यक्तित्व की प्रतिमा विश्वविद्यालय परिसर में लगना हम सभी के लिए गौरव की बात है। कार्यक्रम में कुलपति के एल श्रीवास्तव, एबीवीपी के प्रांत संगठन मंत्री उपमन्यु राणा, पूर्व छात्र संघ अध्यक्ष रविंद्र सिंह राणावत सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

महाराणा प्रताप क्षत्रिय सेवा संस्थान की कार्यकारिणी का गठन

महाराणा प्रताप क्षत्रिय सेवा संस्थान फतहनगर की वार्षिक बैठक 27 जनवरी को फतहनगर (उदयपुर) में आयोजित हुई। संस्थान के अध्यक्ष पर्वत सिंह नया बंगला की अध्यक्षता एवं भोम सिंह चुंडावत खेड़ी व नरपत सिंह राणावतों की सादड़ी के आतिथ्य में संपन्न इस कार्यक्रम में विभिन्न सामाजिक विषयों पर चर्चा की गई। इस अवसर पर संस्था के वार्षिक चुनाव भी आयोजित हुए जिसमें सर्वसम्मति से फतेह सिंह राणावत बंगला को अध्यक्ष, भैरू सिंह मानखंड को वरिष्ठ उपाध्यक्ष, रायसिंह चुंडावत खेड़ी को महामंत्री, नारायण सिंह बुधपुरा को कोषाध्यक्ष व राजवीर सिंह बासनी कला को युवा उपाध्यक्ष चुना गया। इनके अतिरिक्त भी संस्था के विभिन्न पदों हेतु निर्वाचन हुआ। चुनाव अधिकारी सुभाष सिंह कांकरवा ने भगवत सिंह सनवाड़ एवं शेर सिंह राणावतों की सादड़ी के सहयोग से चुनाव प्रक्रिया पूर्ण करवाई।

संपादकीय

'आत्ममंथन की साधना से छलकेगा अमृत-कुम्भ'

भारत सदैव से आस्थाओं और विश्वासों का देश रहा है। वर्तमान में भले ही विज्ञान और तकनीक में समृद्ध देशों द्वारा उनसे अर्जित भौतिक शक्ति के द्वारा संसार का प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में नेतृत्व किया जा रहा हो किंतु जब भारत ने संसार का विश्व गुरु के रूप में नेतृत्व किया था तब उस नेतृत्व क्षमता का स्त्रोत भारत के आस्था पूर्ण जीवन से जन्मा सत्य और धर्म ही था। सत्य और धर्म के आधार पर किया गया वह नेतृत्व ही सच्चे अर्थों में नेतृत्व कहा जा सकता है क्योंकि वह सारे संसार को भी उसी सत्य और धर्म के मार्ग पर लाने की भूमिका निभा रहा था। वर्तमान में विज्ञान के आधार पर नेतृत्व करने वाली शक्तियां संसार को किस दिशा में लेकर जा रही हैं, यह संसार की वर्तमान दशा से स्पष्ट ही है। ऐसा नहीं है कि भारत ने विज्ञान को महत्व नहीं दिया या वैज्ञानिक प्रगति से उसे कोई परहेज था लेकिन भारत के मनीषियों ने बहुत पहले ही यह अनुभव कर लिया था कि विज्ञान मनुष्य की इच्छाओं की पूर्ति का साधन तो बन सकता है किंतु सद्-असद् और उचित-अनुचित का निर्णय करने वाले विवेक की जागृति का आधार विज्ञान नहीं बन सकता और ऐसे विवेक के अभाव में कोई भी समाज स्वयं और अन्यों के लिए कल्याणकारी होकर जीवित नहीं रह सकता बल्कि वह स्वयं और अन्यों के लिए विनाश की भूमिका रचने वाला बन जाएगा।

मनीषियों के इसी अनुभव के आधार पर भारत ने आस्था को अपनी प्रधान जीवन शैली के रूप में चुना। यह आस्था केवल आध्यात्मिक ही नहीं थी बल्कि जीवन के प्रत्येक पक्ष के विकास में आस्था की अनिवार्य भूमिका को हमने अनुभव किया था। भारत की उसी आस्था पूर्ण जीवन शैली का एक प्रतीक वर्तमान में प्रयागराज में आयोजित हो रहा महाकुंभ है। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार समुद्र मंथन में निकले अमृत कुंभ से छलकी बूंदे जिन स्थानों पर गिरी (प्रयागराज, हरिद्वार, उज्जैन और नासिक), उन स्थानों पर प्रत्येक तीन वर्ष में कुंभ का आयोजन होता है। प्रत्येक छह वर्ष पर अर्ध कुंभ एवं 12 वर्ष पर पूर्ण कुंभ का आयोजन होता है। 12 पूर्ण कुंभ पर एक महाकुंभ आयोजित होता है। गंगा, यमुना एवं अप्रकट सरस्वती नदी के त्रिवेणी संगम पर 13 जनवरी से प्रारंभ हुआ यह 45 दिवसीय महाकुंभ वही 144 वर्षों में एक बार आने वाला अवसर है। बौद्ध धर्म के व्यापक प्रभाव की प्रतिक्रिया में वैदिक धर्म को पुनः प्रतिष्ठित करने के उद्देश्य से आदि शंकराचार्य द्वारा कुंभ को साधुओं, संतों एवं दार्शनिकों के मिलन और धर्म-चर्चा का केंद्र बनाया गया। धर्म के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था पर गहरे प्रभाव के उस युग में इसका महत्त्व और भी अधिक था एवं यहां होने वाले संत समागमों से भारतीय समाज को महत्वपूर्ण आध्यात्मिक व सामाजिक मार्गदर्शन मिलता रहा। दीपावली, होली जैसे अनेकों त्यौहारों, पर्वों व उत्सवों की भांति कुंभ भी आस्था से अनुप्राणित भारतीय जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग बन गया। इस महाकुंभ में भी अनुमानित 45 करोड़ लोग भाग लेंगे जो इसके सांस्कृतिक महत्व के साथ ही अभी भी इसमें भारत के जनसामान्य की आस्था का स्पष्ट प्रमाण है।

मानव जीवन को प्रभावित एवं दिशा निर्देशित करने के दृष्टिकोण से आस्था बहुत शक्तिशाली तत्व है लेकिन साथ ही यह अतिसंवेदनशील एवं कोमल तत्व भी है क्योंकि यह जीवन के सूक्ष्म और अप्रकट स्रोत से प्रवाहित होने वाली धारा है। इसलिए जनसामान्य की आस्था का जो कोई प्रतिनिधि बनता है, चाहे वह किसी संत या संन्यासी के रूप में लोगों की आध्यात्मिक आस्था का प्रतिनिधित्व करता हो, किसी राज्य व्यवस्था में किसी पद के रूप में सौंपे गए सामान्यजन के विश्वास का प्रतिनिधित्व करता हो अथवा किसी सामाजिक संगठन में समाज के अपनत्व के भाव का ही प्रतिनिधित्व करता हो, उस प्रतिनिधि का दायित्व बहुत गहरा और गंभीर होता है। वर्तमान में आस्था प्रधान जीवन शैली वाले भारत की यह विडंबना ही है कि आस्था की इस शक्ति का किसी न किसी रूप में अधिपति बनने के लिए तो हर कोई लालायित है, लेकिन उस आधिपत्य के साथ आने वाले दायित्व की गंभीरता को वे अनुभव नहीं कर पाते। जनसामान्य की आस्था के किसी भी रूप का जो कोई प्रतिनिधि बनता है उसका दायित्व है कि वह उस आस्था की शक्ति का उपयोग जन सामान्य के जीवन को शुद्ध, सतोगुणीय और सदाचारी बनाने के लिए करे, उन्हें सद्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करे लेकिन इसके लिए उस प्रतिनिधि को स्वयं भी साधना का मार्ग अपनाना आवश्यक है। बिना साधना के आस्था का प्रतिनिधित्व नहीं किया जा सकता, आस्था की शक्ति को धारण नहीं किया जा सकता और इसीलिए हम देखते हैं कि आज जहां कहीं आस्था के केंद्र दिखाई देते हैं वे कुछ ही समय में ढह पड़ते हैं और लोगों की आस्था भंग हो जाती है। यहां यह पुनः समझ लेना आवश्यक है कि आस्था का अर्थ केवल आध्यात्मिक या धार्मिक आस्था ही नहीं है बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में किया गया विश्वास आस्था ही है। एक संतान का अपने माता-पिता के प्रति सहज विश्वास और प्रेम भी आस्था ही है, एक विद्यार्थी का अपने शिक्षक द्वारा दिए गए शिक्षण को स्वीकारना भी आस्था का ही रूप है और लोकतंत्र जैसी व्यवस्था भी उस व्यवस्था में जनसामान्य की आस्था पर ही जीवित रहती है।

इसलिए मनुष्य की आस्था का भंग होना मानवता के लिए एक अभिशाप है क्योंकि आस्था रहित जीवन स्वार्थी, संकुचित और जड़ बन जाता है। आज यदि भारत भी ऐसे ही स्वार्थी, संकुचित और जड़ जीवन का शिकार हो रहा है तो उसे भले ही हम पाश्चात्य संस्कृति का आक्रमण, वामपंथ का प्रभाव आदि कहकर टालने का प्रयास करें लेकिन उसके मूल में भारत की आस्था पूर्ण जीवन शैली का भंग होना ही है और उसका कारण है उस आस्था का प्रतिनिधित्व करने वालों द्वारा उस प्रतिनिधित्व के लिए आवश्यक साधना की शक्ति से रहित होना। अतः आज भारत को आवश्यकता है ऐसे साधकों की जो जीवन के हर क्षेत्र में जन सामान्य की आस्था के योग्य प्रतिनिधि बन सके और उस आस्था को क्रमशः आस्था के उच्चतर केंद्रों की ओर प्रवाहित करें और अंत में आस्था के अंतिम केंद्र परमेश्वर तक पहुंचाएं। ऐसे साधकों की आत्ममंथन की साधना से ही उस अमृत-कुंभ की उत्पत्ति हो सकती है जिससे छलका अमृत भारतीय जीवन की आस्था को पुनः जीवंतता प्रदान कर सकता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ ऐसे ही साधकों के निर्माण की कार्यशाला है।

कोटा में राजपूत समाज का नववर्ष मिलन समारोह आयोजित

कोटा के उद्योग नगर क्षेत्र में स्थित गुरुद्वारा गार्डन में राजपूत समाज का नववर्ष मिलन समारोह 26 जनवरी को आयोजित किया गया। आयोजन समिति के नरेश सिंह हाड़ा ने बताया कि समाज के सभी संगठनों को एक जाजम पर लाने के लिए आयोजित इस कार्यक्रम में ना कोई मंच रखा गया, ना ही माल्यार्पण जैसी अनावश्यक औपचारिकताओं का पालन किया गया। कार्यक्रम में समाज को आर्थिक, सामाजिक व राजनीतिक रूप से मजबूत बनाने के उपायों पर चर्चा की गई। हाड़ौती शिक्षा प्रचारिणी समिति के अध्यक्ष भंवर सिंह हाडा ने कहा कि इस प्रकार के आयोजन निरंतर होते रहने चाहिए जिससे समाज में एकता के भाव को बढ़ावा मिले। भारतीय जनता युवा मोर्चा के पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष लोकेंद्र सिंह राजावत ने कहा कि समाज के हित में जब भी हमारा आह्वान किया जाए तब हमें वहां अवश्य पहुंचना चाहिए।

श्यामपुरा (हरियाणा) में प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

हरियाणा के महेंद्रगढ़ जिले के श्यामपुरा (सतनाली) में श्री क्षत्रिय युवक संघ का चार दिवसीय प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 11 से 14 जनवरी तक आयोजित हुआ। संघ के सीकर प्रांत प्रमुख जुगराज सिंह जुलियासर ने शिविर का संचालन किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि कठोर सर्दी और बारिश के इस मौसम में भी आप इस शिविर में प्रशिक्षण ले रहे हैं, यह आपकी तपस्या और संकल्प शक्ति का ही प्रमाण है। ऐसी तपस्या और संकल्प से ही समाज की सुप्त शक्ति को जगाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि यहां से वापिस जाकर भी इसी दृढ़ संकल्प के साथ हमें समाज में कार्य करना है और पूज्य श्री तनसिंह जी के संदेश को घर-घर तक पहुंचाना है। संघ के निरंतर संपर्क में रहकर ही हम अपने संकल्प को जागृत रख सकते हैं इसलिए शाखा में निरंतर जाते रहें।

शिविर में महेन्द्रगढ़ जिले के श्यामपुरा, ढाणा, जड़वा ढाणी, खेड़ी, हिसार के तलवंडी रुक्का, सारंगपुर और शिकारपुर गाँवो से 50 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। श्यामपुरा के नरेश सिंह, मोनू सिंह, दिनेश सिंह, पवन सिंह व सुरजीत सिंह जड़वा ढाणी ने स्थानीय समाजबंधुओ के साथ मिलकर व्यवस्था का दायित्व संभाला।

महेंद्रगढ़ में महाराणा प्रताप की प्रतिमा का अनावरण

(वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप की पुण्यतिथि पर विभिन्न स्थानों पर हुए कार्यक्रम)

हरियाणा के महेंद्रगढ़ शहर में वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप चौक पर महाराणा प्रताप की प्रतिमा का अनावरण 19 जनवरी को समारोह पूर्वक किया गया। हरियाणा के कृषि और किसान कल्याण मंत्री श्याम सिंह राणा ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि मेवाड़ के महाराणा प्रताप अपने पराक्रम और शौर्य के लिए पूरे संसार में जाने जाते हैं। देश, धर्म और स्वाधीनता के लिए किया गया उनका त्याग और संघर्ष अतुलनीय है। वे भारतीय इतिहास के अद्वितीय नायक हैं। यह प्रतिमा उनके साहस और समर्पण को नमन करने का एक छोटा सा प्रयास है जिससे हम सभी उनकी स्मृति से प्रेरणा ले सके। प्रदेश के पूर्व शिक्षा मंत्री प्रो. रामबिलास शर्मा, महेंद्रगढ़ के विधायक कंवर सिंह यादव, असंध विधायक योगेन्द्र राणा, पूर्व सीपीएस शारदा राठौड़, जिला अध्यक्ष दयाराम, कार्यक्रम अध्यक्ष रवि चौहान, राजपूत सभा प्रधान सवाई सिंह राठौड़, ठाकुर पूरण सिंह, देशराज फौजी सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति कार्यक्रम में उपस्थित रहे। 19 जनवरी को महाराणा प्रताप की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में देशभर में विभिन्न स्थानों पर कार्यक्रम आयोजित हुए। हरियाणा के कैथल में भी महाराणा प्रताप चौक पर पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में हवन का आयोजन किया गया। क्षत्रिय राजपूत महासभा के अध्यक्ष रुलिया राणा, मेवाड़ी क्षत्रिय राजपूत महासभा के उपाध्यक्ष ज्ञान सिंह सोलंकी, जयपाल तंवर, रामपाल राणा, रोहताश राणा, बिरजू राणा, जसबीर राणा सहित अनेकों समाजबंधु कार्यक्रम में उपस्थित रहे। इस अवसर पर कैथल में राजपूत समाज के लिए सामुदायिक केंद्र के निर्माण की मांग भी रखी गई। मध्य प्रदेश के मंदसौर में भी जिला राजपूत समाज संगठन की ओर से महाराणा प्रताप की पुण्यतिथि पर कार्यक्रम आयोजित हुआ। कार्यक्रम में जनपद पंचायत मंदसौर के अध्यक्ष बसंत शर्मा, संस्था के उपाध्यक्ष प्रीतिपाल सिंह राणा, जिला सचिव दशरथ सिंह चंद्रावत, प्रताप क्लब अध्यक्ष योगेंद्र सिंह चुंडावत आदि ने अपने विचार रखे एवं महाराणा प्रताप के आदर्श जीवन से प्रेरणा लेकर राष्ट्र और समाज की सेवा करने की बात कही। झारखंड जमशेदपुर में क्षत्रिय महासभा राजपूत समाज अखंड भारत की ओर से भी महाराणा प्रताप की पुण्यतिथि पर कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें मरीन ड्राइव गोल चक्कर पर स्थित प्रताप की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। संस्था के जिला अध्यक्ष रूपम सिंह, राजू सिंह, अमन गौरव, लाल बाबू सहित अनेकों कार्यकर्ता उपस्थित रहे। भीलवाड़ा जिले के आसींद कस्बे में प्रताप सर्कल पर स्थित महाराणा प्रताप की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित करके उनकी पुण्यतिथि पर उन्हें स्मरण किया गया। महाराणा प्रताप सेवा संस्थान के अध्यक्ष तेजवीर सिंह चुंडावत, नगर पालिका उपाध्यक्ष विक्रमशिला चुंडावत, पार्षद परशुराम सोनी, पूर्व पार्षद भैरू सिंह भाटी सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति इस अवसर पर उपस्थित रहे।

श्री राजपूत सभा ब्यावर के अध्यक्ष बने अजीत सिंह

श्री राजपूत सभा ब्यावर की बैठक 22 जनवरी को ब्यावर के शिवनाथपुरा में स्थित राजपूत छात्रावास में आयोजित हुई। बैठक में अजीत सिंह चांदारूण को निर्विरोध सभा का नया अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। बैठक में महासचिव नंदलाल सिंह बाबरा ने संस्था द्वारा पिछले वर्ष में किए गए कार्यों का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया। नवनिर्वाचित अध्यक्ष ने कहा कि ब्यावर जिले में समाज को सामाजिक एवं राजनीतिक रूप से मजबूत करने के साथ ही युवाओं को शिक्षा एवं रोजगार में सहायता एवं मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए कार्य करना उनकी प्राथमिकता होगी।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

BNB
ॐ
श्री योगेश्वर छात्रावास
कुचामन सिटी
विशेषताएं
1. कक्षा 6 से 12 वीं तक के विद्यार्थियों हेतु सीमित स्थान ।
2. अनुशासित एवं नियमित दिनचर्या ।
3. शुद्ध, पौष्टिक एवं सात्विक आहार ।
4. सभी प्रमुख शिक्षण संस्थाओ के समीप स्थित ।
5. स्वाध्याय हेतु निःशुल्क लाईब्रेरी सुविधा ।
जिम्मेदारी हमारी विश्वास आपका
संम्पर्क सूत्र :
9772097087, 9799995005, 8769190974
SBI बैंक के पास, डीडवाना रोड़, कुचामन सिटी

पारसोली में सामूहिक यज्ञ व विशेष शाखा आयोजित

चित्तौड़गढ़ प्रांत में श्री क्षत्रिय युवक संघ की विशेष शाखा पारसोली (बड़ी सादड़ी) में गुलाब सिंह चुंडावत के आवास परिसर में 12 जनवरी को आयोजित की गई। संघ के केंद्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली के निर्देशन में सामूहिक यज्ञ का आयोजन हुआ जिसमें सभी उपस्थित समाजबंधुओं व मातृशक्ति ने आहुतियां प्रदान की। परिचय सत्र के बाद साजियाली ने बताया कि इन विशेष शाखाओं के आयोजन का उद्देश्य है कि संघ क्या कार्य करता है, कैसे करता है, इसकी जानकारी समाज को मिल सके। कार्यक्रम में संघ के आनुषंगिक संगठनों श्री क्षात्र पुरुषार्थ फाउंडेशन तथा श्री प्रताप फाउंडेशन के बारे में भी जानकारी दी गई। संघ साहित्य तथा केसरिया पताकाओं का वितरण भी किया गया। शाखा के उपरांत सभी ने निकटवर्ती ऐतिहासिक व धार्मिक स्थल पारसोलिया भैरूजी के दर्शन किए।

लुहारी (रतलाम) में बैठक कर लिया कुरीतियों की समाप्ति का निर्णय

मध्य प्रदेश के रतलाम जिले के जावरा क्षेत्र के लुहारी गांव के राजपूत समाज की बैठक 15 जनवरी को आयोजित हुई जिसमें विभिन्न सामाजिक कुरीतियों को बंद करने का निर्णय लिया गया। मृत्युभोज में मिठाई नहीं बनाने सहित अन्य कुरीतियों से दूर रहने का भी संकल्प लिया गया।

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में क्षत्रिय विद्यार्थियों की बैठक

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के क्षत्रिय विद्यार्थियों की बैठक 19 जनवरी को ब्रोचा मैदान में आयोजित हुई। प्रताप टोली द्वारा आयोजित इस बैठक में क्षत्रिय समाज में व्याप्त कुरीतियों के साथ ही विभिन्न क्षेत्रों में समाज के साथ हो रही व्यवस्थागत उपेक्षा एवं भेदभाव पर चर्चा की गई। समाज में संगठन की आवश्यकता पर बल देते हुए बैठक में पाक्षिक मिलन कार्यक्रम के आयोजन, क्षत्रिय समाज के विचारवान विद्यार्थियों को श्री क्षत्रिय युवक संघ से जोड़ने, विश्वविद्याय परिसर में क्षत्रिय समाज के बीच भ्रातृत्व की भावना का संचार करने एवं विश्वविद्यालय परिसर में प्रभावशाली क्षत्रिय व्यक्तित्वों से संपर्क करने आदि के निर्णय लिए गए।

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

स्मारक केवल प्रतीक है, अंत:प्रेरणा को जगायें: संरक्षक श्री

(पेज एक से लगातार)

असंतोष इतना फैल गया है कि लगता है यह युग ही असंतोष का आ गया है। ऐसे में तनसिंह जी ने यह अनुभव किया कि इस अराजकता को, इस असंतोष को दूर करने के लिए क्षत्रिय जाति को ही आगे आना होगा। इसके लिए क्षत्रिय जाति को किस तरह तैयार किया जाए, उसी दृष्टिकोण को लेकर उन्होंने श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की। उन्होंने स्वयं अपने जीवन के द्वारा संदेश दिया कि किस प्रकार इस युग में भी सुख और शांति के मार्ग पर चला जा सकता है। इस प्रकार धर्म की स्थापना का मार्ग प्रशस्त किया।

आज सभी लोग धन, पद, सत्ता आदि के पीछे भाग रहे हैं लेकिन यह किसी को पता नहीं है कि अंत में जाना कहां है। यह समझने की आवश्यकता है कि बाहर कहीं सुख नहीं है। इसलिए सब दौड़ छोड़कर अंदर मुड़ जाओ। बाहर कहीं ना ईश्वर है, ना सुख है। जो कुछ है वह अपने अंदर है। गीता में बिल्कुल स्पष्ट कहा है कि ईश्वर हर प्राणी के हृदय में निवास करता है। वो जहां हैं वहां हम ढूंढते नहीं और बाहर जंगलों में जाकर के तपस्या करते हैं तो उससे भी सुख नहीं मिल सकता। इसलिए आप लोग पुनः विचार करें। मैं कौन हूं, इस पर चिंतन करें। जब भगवान हमारे अंदर रहता है तो फिर मंदिर बनाने की क्या आवश्यकता है? मनुष्य के रूप में जो मंदिर स्वयं भगवान ने बनाया है उसे छोड़कर किसी और मंदिर की क्या आवश्यकता है? इसे नहीं समझा तो बाहरी औपचारिकताओं में ही उलझ कर रह जाएंगे। इसलिए सावधान रहें कि यह स्मारक भी केवल मात्र तनसिंह जी का प्रतीक है। इसमें केवल बैठकर के ही प्रेरणा नहीं मिलेगी। अपने अंदर जाकर अन्तःप्रेरणा को जगाना होगा। उसके लिए जो आगे कदम चल रहे हैं, जो हमारे अग्रज हैं, उनसे हम प्रेरणा लें। जब द्रौपदी ने भगवान कृष्ण पर अपनी रक्षा का भार छोड़ा तो भगवान ने तुरंत उसकी सहायता की। जब तक वह अन्यों पर भरोसा करती रही तब तक वह विपत्ति में फंसी रही। उसी प्रकार जिन चीजों से हम बंधे हुए हैं, जो हमारे दुख का कारण है, उनको पकड़े बैठे रहेंगे तो हम भी दुख में उलझे रहेंगे। माया के इन बंधनों को हमें छोड़ना होगा। यह केवल क्षत्रिय जाति की बात नहीं है, सनातन सत्य की बात है। उसका हम पालन करेंगे तो सारे धर्मों का पालन हो जाएगा। एकमात्र भगवान ही शुद्ध, शाश्वत व अमर तत्व है जो हमको भी अमर बना सकता है। उसकी शरण में जाएं तो हमारा कल्याण निश्चित है। यह तनसिंह जी के माध्यम से हमने सुना और वही श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में प्रसारित कर रहे हैं। हमारे भीतर ही परमात्मा का निवास है। इस परमात्मा का निवास आज हम यहां अनुभव कर रहे हैं, इस अनुभूति को आप यहां से लेकर पधारें।

(पृष्ठ दो का शेष)

समाज की नींव...

तभी से बालिकाओं में संघ का कार्य चल रहा है। हम जानते हैं कि जब हम कोई भवन बनाते हैं तो उसकी नींव मजबूत होना आवश्यक है। हमारे समाज की नींव हमारी बालिकाएं हैं। इसलिए इन बालिकाओं के जीवन में ऐसे संस्कार दिए जाने चाहिए जिससे वह आगे जाकर अपने परिवार, समाज और राष्ट्र को भी संस्कारित बना सके। इसी कड़ी में दंपति शिविर भी प्रारंभ हुए। पति-पत्नी परिवार के दो पहिए की भांति होते हैं जिनमें सही संतुलन बना रहना चाहिए तभी परिवार अच्छे से चल सकता है। इसी बात को समझाने के लिए दंपति शिविर में प्रशिक्षण दिया जाता है। आज के समय में बालिकाओं को, महिलाओं को संस्कारों की कितनी आवश्यकता है इस बात को हम सभी जानते हैं। शिक्षा की भी आवश्यकता है लेकिन शिक्षा के साथ संस्कार भी उतने ही आवश्यक हैं और वे संस्कार केवल श्री क्षत्रिय युवक संघ की पाठशाला में ही मिल रहे हैं। आज की बालिका संस्कारवान होगी तो आने वाली पीढ़ियां भी सुसंस्कृत होंगी।

कर्त्तव्य बोध...

इस महापाप से हमें बचना है। श्री क्षत्रिय युवक संघ स्वाध्याय, चिंतन और सत्संग से हमें अपने वास्तविक स्वरूप का बोध कराता है। समाज में जागृति लाकर कर्तव्य पालन के लिए प्रेरित करने वाले ऐसे महापुरुष तनसिंह जी को मैं प्रणाम करता हूं।

सावर के जयवर्धन व चंद्रवीर ने राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में किया प्रतिनिधित्व

सावर के राठौड़ मोहल्ला निवासी जयवर्धन सिंह राठौड़ पुत्र हनुमान सिंह ने 8 जनवरी से 18 जनवरी तक शूटिंग रेंज मोहाली चंडीगढ़ में आयोजित ऑल इंडिया इंटर यूनिवर्सिटी शूटिंग चैंपियनशिप 10 मीटर एयर राइफल शूटिंग में भाग लिया एवं उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। जयवर्धन वर्तमान में कोटा विश्वविद्यालय के अकलक महाविद्यालय से स्नातक कर रहे हैं। राष्ट्र स्तरीय योगासन खेलकूद प्रतियोगिता (आयु वर्ग 19) का आयोजन महाराष्ट्र के कोल्हापुर में 14 से 18 जनवरी तक हुआ जिसमें सावर निवासी चंद्रवीर सिंह पुत्र सुरज्ञान सिंह ने भाग लेकर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। चंद्रवीर वर्तमान में आदर्श इंडियन पब्लिक स्कूल देवली में कक्षा 8 का छात्र है। दोनों खिलाड़ियों के सावर पहुंचने पर परिजनों एवं समाजबंधुओ द्वारा उनका स्वागत किया गया।

आदित्यपुर (झारखंड) में पारिवारिक मिलन सह वनभोज का आयोजन

झारखंड क्षत्रिय संघ की आदित्यपुर इकाई का पारिवारिक मिलन सह वनभोज का आयोजन 19 जनवरी को आदित्यपुर स्थित जयप्रकाश उद्यान में आयोजित किया गया। जमशेदपुर पश्चिमी विधायक सरयू राय ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि क्षत्रिय समाज अपने त्याग, बलिदान, वीरता और उच्च परंपराओं के लिए जाना जाता है। इस पहचान को हमें सुरक्षित रखना और इसके लिए सभी को साथ लेकर चलना होगा। उन्होंने कहा कि समाज के युवाओं को रोजगार के अवसर बढ़ाने के लिए उचित प्रशिक्षण और कौशल विकास के माध्यम से प्रेरित करना चाहिए। आजसू पार्टी के केंद्रीय सचिव चंद्रगुप्त सिंह, झारखंड क्षत्रिय संघ के अध्यक्ष शंभूनाथ सिंह ने भी अपने विचार रखे और संगठित रहने की बात कही। वनभोज के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया जिसमें स्थानीय कलाकारों ने प्रस्तुतियां दीं।

घाणेराव में 14वाँ नववर्ष कैलेंडर विमोचन समारोह आयोजित

श्री गोडवाड़ सांस्कृतिक शोध संस्थान एवं गोड़वाड़ विरासत पत्रिका के संयुक्त तत्वावधान में 14वां नववर्ष कैलेंडर विमोचन समारोह 26 जनवरी को घाणेराव में आयोजित हुआ। श्री गोड़वाड़ संस्कृत शोध संस्थान के संरक्षक हिम्मत सिंह मेड़तिया ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि गोड़वाड़ प्रदेश की ऐतिहासिक विरासत, इतिहास, कला, संस्कृति एवं प्राचीन धरोहर के संरक्षण के लिए हम सभी को मिलकर प्रयास करना होगा। उन्होंने डॉ भंवर सिंह राठौड़ द्वारा लिखित गोड़वाड़ के इतिहास का प्रकाशन भी जल्द करने की बात कही। गोड़वाड़ विरासत के संपादक जितेंद्र सिंह राठौड़ की ओर से संस्थान का वार्षिक प्रतिवेदन एवं आगामी कार्यों की रूपरेखा प्रस्तुत की गई।

बालोतरा राजपूत छात्रावास में वॉलीबॉल प्रतियोगिता का आयोजन

बालोतरा स्थित श्री वीर दुगार्दास छात्रावास में माजीसा स्पोर्ट्स क्लब के तत्वाधान में एकदिवसीय वॉलीबॉल प्रतियोगिता का आयोजन 12 जनवरी को किया गया जिसमें ग्यारह टीमों के लगभग 110 खिलाड़ियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता के फाइनल में श्री दुगार्दास क्लब परेऊ ने श्री मल्लीनाथ क्लब कालेवा को पराजित कर विजय प्राप्त की। प्रतियोगिता के समापन समारोह में भाजपा नेता भवानी सिंह टापरा ने कहा कि युवाओं को शिक्षा के साथ ही खेलों में भी अग्रणी रहना चाहिए क्योंकि खेल हमारे शारीरिक स्वास्थ्य के लिए ही नहीं मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी लाभदायक है। मोहन सिंह बुडीवाडा ने कहा कि युवाओं को स्वस्थ रहने के लिए खेलों को भी अपनी दिनचर्या का अनिवार्य हिस्सा बनाना चाहिए। सहायक प्रोफेसर पदम सिंह भाउड़ा ने सरकारी सेवाओं में खेलकूद के प्रमाण पत्रों के महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन भैरो सिंह डंडाली ने किया। हरिसिंह वेदरलाई ने आयोजन में सहयोग किया। प्रवीण सिंह बुडीवाडा, कान सिंह झंवर, उदय सिंह तिलवाड़ा, जोग सिंह असाड़ा, सुमेर सिंह कालेवा सहित अनेकों समाजबंधु इस अवसर पर उपस्थित रहे।

(पृष्ठ दो का शेष)

स्मारक का लोकार्पण...

मुख्य कार्यक्रम के अतिरिक्त भी अनेक स्थानों पर 25 व 26 जनवरी को पूज्य तनसिंह जी की जयंती मनाई गई। पाली स्थित वीर दुर्गादास राजपूत छात्रावास में जयंती कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें छात्रावास अधीक्षक जवान सिंह ने तनसिंह जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। कुचामन स्थित श्री हनुवंत राजपूत छात्रावास में भी जयंती मनाई गई जिसमें छात्रावास के सभी युवा उपस्थित रहे व पूज्य श्री को श्रद्धांजलि अर्पित की। नागौर मे श्री अमर राजपूत छात्रावास में भी कार्यक्रम हुआ। दुर्गा माता मंदिर, राजस्थान राजपूत समाज पुणे में भी पूज्य श्री की 101वीं जयंती मनाई गई। पुणे के पिंपरी चिंचवड में रावल मल्लीनाथ शाखा द्वारा भी जयंती मनाई गई। मुंबई में गिरगांव चौपाटी और तुर्भे में जयंती मनाई गई। दक्षिण भारत प्रांत के बेंगलुरु मंडल द्वारा राजपूत समाज भवन राणासिंहपेट में जयंती कार्यक्रम आयोजित किया गया। देवेंद्र सिंह भिवालिया ने पूज्य श्री का परिचय दिया। विजय प्रताप सिंह रायरा ने श्री क्षत्रिय युवक संघ के बारे में बताया। स्वरूप सिंह बावरला ने स्वरचित आलेख 'तन के मन की व्यथा' का पठन किया। वीरेंद्र सिंह पादरू ने कार्यक्रम का संचालन किया। हैदराबाद में स्थित संजीवैया पार्क में भी पूज्य श्री की 101वीं जयंती मनाई गई। सुलताना स्थित श्री

करणी माता मंदिर परिसर में भी कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें गजेंद्र सिंह टिकाई ने तनसिंह जी का परिचय दिया। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में भी क्षत्रिय छात्र संघ लखनऊ के तत्वावधान में पूज्य श्री की जयंती मनाई गई। कार्यक्रम में भारत को स्वतंत्र एवं गणतंत्र राष्ट्र बनाने में क्षत्रिय समाज का योगदान, समाज के प्रेरणास्रोत पूज्य तनसिंह जी का जीवन परिचय, उत्तर प्रदेश राज्य में ईडब्ल्यूएस आरक्षण सरलीकरण की मांग, लखनऊ में अवध केसरी राणा बेनी माधव सिंह राजपूत छात्रावास की मांग, राजपूत इतिहास के

विकृतिकरण पर चिंतन एवं सामाजिक सद्भावना विकसित करने आदि विषयों पर चर्चा की गयी। सूरतगढ़ स्थित करणी माता मंदिर परिसर में भी जयंती कार्यक्रम का आयोजन हुआ। मेजर हरि सिंह ओला ने तनसिंह जी के साथ के संस्मरण सुनाए। खुमान सिंह गोकुल, श्रेणी दान चारण आदि ने भी अपने विचार रखे। रविंद्र सिंह झिनझिनयाली व महेंद्र सिंह रेणुवा ने पूज्य श्री का परिचय दिया। कान सिंह अर्जुना ने कार्यक्रम का संचालन किया।

जयंती व स्मारक लोकार्पण समारोह के निमित्त 23 जनवरी को बाड़मेर शहर में दुपहिया वाहन रैली का भी आयोजन किया गया। प्रातः 11:00 बजे माननीय संरक्षक श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर द्वारा हरी झंडी दिखाकर आलोक आश्रम से रैली को रवाना किया गया। यहां से केसरिया साफा धारी युवकों की यह अनुशासित रैली तनसिंह सर्किल, गांधी चौक, अहिंसा सर्किल, विवेकानंद सर्किल, रावल मल्लिनाथ सर्किल, पाबूजी राठौड़ सर्किल, अंबेडकर सर्किल, महावीर सर्किल होते हुए पूज्य तनसिंह जी की छतरी पर पहुंची। यहां से प्रताप जी की प्रोल, चौहटन रोड, रॉय कॉलोनी रोड होते हुए श्री रानी रूपादे संस्थान पहुंची जहां रैली का समापन हुआ। शहर में अनेक स्थानों पर शहरवासियों द्वारा पुष्प वर्षा कर रैली का स्वागत किया गया।

हैदराबाद में माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर आयोजित

हैदराबाद स्थित केशतरा फॉर्म हाऊस (भाग्यनगर) में श्री क्षत्रिय युवक संघ का माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर 11 से 15 जनवरी तक माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास के सान्निध्य में आयोजित हुआ। शिविरार्थियों का स्वागत करते हुए संघप्रमुख श्री ने कहा कि बिखरे हुए मोतियों को पुनः पिरोने का एक संकल्प लेकर श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना पूज्य तनसिंह जी ने की। अपनी संस्कृति, परंपरा, स्वधर्म आदि को भूलकर हम बिखर चुके हैं। संघ हमारे इस बिखराव को समाप्त करके हमें एक सूत्र में बांधने वाली विचारधारा और तपस्या है। पूर्वजों की परंपरा और संस्कृति को पुनः स्थापित करने के लिए हमें शक्ति संपन्न बनना पड़ेगा और इसके लिए हमें साधना करनी पड़ेगी। पूर्वजों के गुणों को हम अपने भीतर उतारना चाहते हैं तो अभ्यास ही उसके लिए मार्ग है। अभ्यास रूपी यह साधना करनी है तो हमें जागृत रहना पड़ेगा क्योंकि यह कांटो भरा मार्ग है। देखने में संघ की साधना सरल लग सकती है लेकिन वास्तव में यह अत्यंत कठिन है। उन्होंने बताया कि संघ की साधना की प्रथम सीढ़ी है कि हम आज्ञा पालन करना सीख जाए। यह अहंकार को मिटाए बिना नहीं हो सकता। समाज को पुनः शक्ति संपन्न बनाने के लिए गांव-गांव, नगर-नगर तक संघ और पूज्य तनसिंह जी के संदेश को पहुंचाना है। पूज्य श्री का दिव्य स्वरुप हमें प्रेरणा देने के लिए सदैव हमारे साथ है। विदाई के अवसर पर संघप्रमुख श्री ने कहा कि इस शिविर में पांच दिन की तपस्या से जो ज्योति आपके हृदय में जगी है, उस ज्योति का प्रकाश आपको पूरे समाज में फैलाना है। मैं अनुभव करता हूं कि यहां आकर आपने अपने आप को पहचाना है कि आप किन महान पूर्वजों की संतान हैं। इस पहचान से आपको आपके लक्ष्य की भी स्पष्टता से पहचान हो गई होगी और जो अपने लक्ष्य को जान लेता है वह उधर बढ़ना प्रारंभ कर देता है। उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य वही क्षात्रधर्म है जिसका पालन हमारे महान पूर्वजों ने किया। संघ हमें उसी क्षात्रधर्म के पालन के लिए प्रशिक्षित कर रहा है। केंद्रीय कार्यकारी गजेन्द्र सिंह आऊ ने शिविर का संचालन किया। शिविर में मुंबई, सूरत, पुणे, बेंगलुरु, चेन्नई, हुबली, विजयवाड़ा, राजमुंद्री, विशाखापट्नम, हैदराबाद, गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश आदि स्थानों के 101 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। मातृशक्ति स्नेहमिलन- 15 जनवरी को शिविर समापन के पश्चात माननीय संघप्रमुख श्री के सान्निध्य में स्थानीय मातृशक्ति का स्नेहमिलन भी आयोजित किया गया। संघप्रमुख श्री ने मातृशक्ति से संवाद करते हुए कहा कि नारीशक्ति पर ही समाज की भावी पीढ़ी के निर्माण का दायित्व होता है। इस दायित्व को निभाने के लिए धैर्य, सहनशक्ति, संकल्प शक्ति जैसे गुण आवश्यक है। आज के समय में परिवारों में जो बिखराव आ रहा है, उसका कारण इन गुणों की कमी ही है। इसलिए यह आवश्यक है कि समाज की बालिकाओं को संस्कारित किया जाए जिससे वे भविष्य में परिवार और समाज को संस्कारित करने का दायित्व निभा सके। उन्होंने कहा कि श्री क्षत्रिय युवक संघ इसीलिए मातृशक्ति शाखाओं व शिविरों के माध्यम से संस्कार निर्माण का यह कार्य कर रहा है। आप स्वयं भी शाखा व शिविरों में भाग लेवें और अपनी संतान को भी भेजें।

धौलपुर में समारोहपूर्वक हुआ महाराणा प्रताप की प्रतिमा का अनावरण

धौलपुर में ओडेला रोड स्थित राजपूत छात्रावास में 25 जनवरी को महाराणा प्रताप की अष्टधातु निर्मित प्रतिमा का अनावरण समारोह पूर्वक किया गया। समारोह को संबोधित करते हुए केंद्रीय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने कहा कि राजपूत समाज का एकजुट होना समाज के साथ ही देश के भी उज्ज्वल भविष्य का संकेत है। वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप हम सभी के प्रेरणास्रोत हैं और उनकी प्रतिमा का अनावरण यहां होना सभी के लिए गौरव की बात है। प्रताप केवल भारत में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में स्वाभिमान और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष के नायक के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने कहा कि आज का दिन विशेष है क्योंकि आज पूज्य तनसिंह जी की भी जयंती है जिन्होंने क्षत्रिय समाज को वर्तमान परिस्थितियों में अपने कर्तव्य के पालन का शिक्षण देने हेतु श्री क्षत्रिय युवक संघ जैसी संस्था की स्थापना की। मध्य प्रदेश विधानसभा अध्यक्ष नरेंद्र सिंह तोमर ने कहा कि आज यहां धौलपुर की धरती पर महाराणा प्रताप को नमन करने के लिए तीन राज्यों के क्षत्रिय उपस्थित हुए हैं जिससे कुंभ के पवित्र संगम जैसी छवि बन रही है। यह प्रताप के प्रति लोगों की श्रद्धा ही है जिससे आज इतनी बड़ी संख्या में जनसमूह यहां एकत्रित हुआ है। पूर्व मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास ने कहा कि प्रताप के व्यक्तित्व से हमें विपरीत परिस्थितियों में भी संघर्ष करते रहने की प्रेरणा लेनी चाहिए। समाज के हित की जहां बात हो, वहां हमें सभी राजनीतिक मतभेदों को भूलकर एक दूसरे का सहयोग करना चाहिए। पूर्व मंत्री राजेंद्र सिंह गुढ़ा ने कहा कि राजनीतिक दलों पर निर्भर ना रहते हुए हमें समाज की लड़ाई स्वयं लड़नी चाहिए। आरटीसी के पूर्व अध्यक्ष धर्मेंद्र राठौड़ ने कहा कि ईडब्ल्यूएस आरक्षण के सरलीकरण हेतु केंद्र सरकार पर सभी को मिलकर दबाव बनाने की आवश्यकता है। मुरैना सांसद शिवमंगल सिंह, पूर्व विधायक बाड़ी गिर्राज सिंह मलिंगा, पूर्व विधायक राजाखेड़ा मनोरमा सिंह, पूर्व विधायक रविंद्र सिंह भिड़ौसा आदि ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया तथा ईडब्ल्यूएस आरक्षण सहित विभिन्न सामाजिक व राजनीतिक विषयों पर अपनी बात रखी। कार्यक्रम में पूर्व विधायक सत्यपाल सिंह, पूर्व विधायक रोहिणी सिंह, भाजपा उपाध्यक्ष मोतीलाल मीणा, मेघराज सिंह रॉयल, आराधना सोलंकी, राजपूत सभा के जिलाध्यक्ष भागीरथ सिंह, पूर्व प्रधान देवेंद्र प्रताप सिंह, वीरेंद्र सिंह जादौन सहित अनेको गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। समारोह में राजस्थान, हरियाणा व मध्य प्रदेश से हजारों की संख्या में लोग प्रताप को श्रद्धांजलि देने के लिए उपस्थित रहे।

जयंती के निमित्त रक्तदान शिविर का आयोजन

पूज्य श्री तनसिंह जी की 101वीं जयंती के निमित्त 19 जनवरी को जयपुर स्थित संघ के केंद्रीय कार्यालय संघशक्ति भवन में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। श्री प्रताप युवा शक्ति के तत्वावधान में आयोजित हुए इस शिविर में शहर के विभिन्न स्थानों से पहुंचे 400 से अधिक युवाओं ने रक्तदान किया। मातृशक्ति द्वारा भी रक्तदान किया गया। माननीय संघप्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बैण्याकाबास एवं वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी के सान्निध्य में आयोजित हुए कार्यक्रम में जयपुर ग्रामीण संसद राव राजेंद्र सिंह, पूर्व पर्यटन निगम अध्यक्ष धर्मेंद्र सिंह राठौड़, भाजपा प्रदेश मंत्री श्रवण सिंह बगड़ी, पूर्व कांग्रेस सचिव महेंद्र सिंह खेड़ी, भाजपा नेता प्रेम सिंह बनवासा, कर्मचारी संघ अध्यक्ष गजेंद्र सिंह खोजास, भवानी निकेतन समिति के अध्यक्ष नगेंद्र सिंह बगड़ एवं सचिव सुदर्शन सिंह सुरपुरा सहित अनेकों गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। सुबह 9 से शाम 5 बजे तक चले रक्तदान शिविर के निरीक्षण के लिए एसएमएस अस्पताल के सहायक अधीक्षक संजय सिंह शेखावत भी उपस्थित रहे। श्री प्रताप युवा शक्ति की ओर से सभी रक्तदाताओं को स्मृति चिह्न भेंट किए गए। संघ के जयपुर संभाग प्रमुख राम सिंह अकदड़ा सहयोगियों सहित कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

ज्ञानेंद्र प्रताप सिंह बने सीआरपीएफ के महानिदेशक

केंद्र सरकार ने ज्ञानेंद्र प्रताप सिंह जादौन को केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) का नया महानिदेशक (डीजी) नियुक्त किया है। केंद्रीय गृह मंत्रालय के प्रस्ताव को कैबिनेट की नियुक्ति समिति (एसीसी) द्वारा मंजूरी मिलने पर 18 जनवरी को कार्मिक और प्रशिक्षण विभाग द्वारा इस संबंध में आदेश जारी किए गए। असम कैडर के 1991 बैच के आईपीएस अधिकारी ज्ञानेंद्र उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले के दौरऊ गांव के मूल निवासी हैं। वे इससे पहले असम पुलिस के प्रमुख के रूप में कार्यरत थे। उन्होंने विशेष सुरक्षा समूह (SPG) और राष्ट्रीय जांच एजेंसी (NIA) में भी महत्वपूर्ण पदों पर अपनी सेवाएं दी हैं। उनकी पुत्री ऐश्वर्या प्रताप सिंह भी 2021 बैच की आईपीएस अधिकारी है।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (स्वत्वाधिकारी) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक राजेन्द्र सिंह राठौड़ द्वारा भास्कर प्रिंटिंग प्रेस, डी बी कॉर्प लिमिटेड, प्लोट नंबर-01, मंगलम कनक वाटिका के पीछे, प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना, रेल्वे क्रोसिंग के पास, बिलवा, शिवदासपुरा, टोंक रोड़, जयपुर (राजस्थान)-303903 (दूरभाष- 6658888) से मुद्रित एवं ए-8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 (दूरभाष- 2466353) से प्रकाशित। संपादक- राजेंद्र सिंह राठौड़।
Email- pathprerak1997@gmail.com Website- www.shrikys.org